रस राज

श्रीकृष्ण

ऊं विष्णुपाद परमहंस चूड़ामणि

श्री श्रील भक्ति रक्षक श्रीधर दैव- गोस्वामी महाराज

संस्थापकाचार्य

श्री चैतन्य सारस्वत मठ

श्री श्री गौरांगौ जयत :

रस राज
श्री कृष्ण

श्री श्रीमत् गौड़ीय सम्प्रादयक- संरक्षक
आचार्य शिरोमणि
श्री श्रीमत् भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद
के प्रियतम पार्षद
ऊं विष्णुपाद- परिव्राजकाचार्य कुल चूड़ामणि
श्री श्रीमत् भक्तिरक्षक श्रीधरदेव गोस्वामी
महाराज के अनुकम्पित
परिव्राजकाचार्य श्रीमत भक्तिसुन्दर गोविन्द महाराज
द्वारा सम्पादित

© Copy Right Reserued
First Edition 1991
5000 Copies

Translated in Hindi from :
The Search for Srikrishna.
Reality the Beautiful

Published by :
Sri Purnanand Brahmachari
Sri Chaitnya Sarswat, MATH,
Kolerganj, P.O. Nabadwip
Dist. Nadia. W.B. PIN-741 302
Tel. Nabadwip 85
Date : 31.10. 91

Translated by,
Dr. S.N. Pande, Vrindaban (U.P.)

श्री चैतन्य सारस्वत मठ नवद्वीप (1941-1991)

के

स्वर्ण जयन्ती

एवं

श्री गुरू महाराज के आविर्भाव दिवस के उपलक्ष्य में गोलोक लीला निमग्न गुरूमहाराज श्री श्रील ऊं विष्णुपाद भक्तिरक्षक श्रीधरदेव गोस्वामी के संकल्प तथा वर्तमान आचार्य देव श्रील भक्ति सुन्दर गोविन्द महाराज की सत्प्रेरणा से
श्री गुरूमहाराज के वचनामृत का समर्पण

प्रकाशक
—— श्री पूर्णानन्द ब्रह्मचारी ——

श्री चैतन्य सारस्वत मठ
नवद्वीप, अमृतधाम
जनपद - नदिया ७४१ ३०२

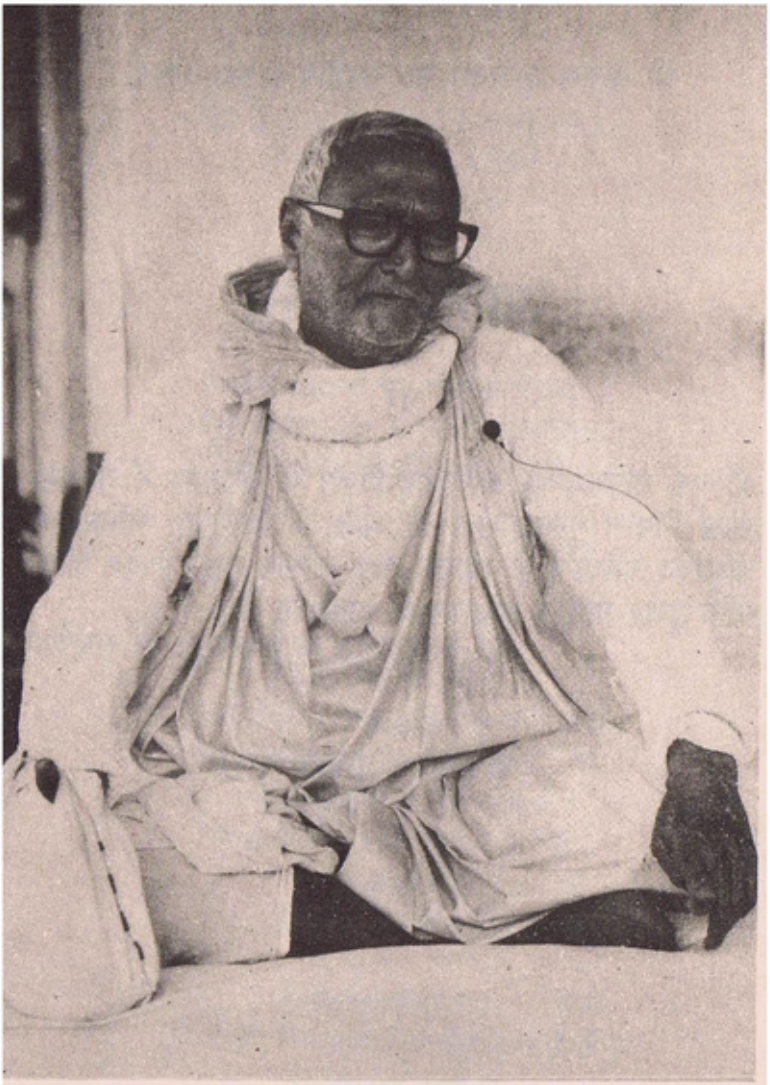

His Divine Grace Srila Bhakti Rakshaka Sridhar Deva Goswami Maharaja

कृष्ण चेतना : प्रेम और सौन्दर्य

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में बंगाली कवि हेमचन्द्र ने लिखा, "ऐसे अनेक देश हैं जो महत्ता की ओर अग्रसर हैं। यह देश, वह देश- जापान एक बहुत छोटा देश है, किन्तु वह सूर्य की तरह उग रहा है। केवल भारत शाश्वत निद्रा में निमग्न है।" जब उन्होंने विश्व के दूसरे भाग की चर्चा की तो कहा, "अमेरिका शक्तिशाली रूप से उठ रहा है जैसे वह समग्र संसार को निगल जाने के लिये आ रहा है। कभी कभी वह शोर करता है जैसे युद्ध के लिये चीख रहा हो और सारा जगत कांप रहा है। उसका उत्साह इतना गहन और महान है कि वह विश्व को सौर मण्डल से खींच लेना चाहता है, तथा उसे एक नवीन आकृति, एक नया रूप देना चाहता है।" हेमचन्द्र द्वारा अमेरिका का वर्णन इस प्रकार किया गया है। इसी प्रकार भक्तिवेदान्त स्वामी महाराज कृष्ण चेतना के माध्यम से विश्व को एक नवीन रूप देने हेतु पधारे।

कृष्ण चेतना क्या हैं ? कृष्ण चेतना का अर्थ है सच्चा प्रेम और सौन्दर्य। वर्चस्व वास्तविक प्रेम तथा सौन्दर्य का होना चाहिये, स्वार्थ अथवा शोषण का नहीं सामान्यता जब हम सौन्दर्य को देखते हैं तो सोचते हैं कि सौन्दर्य शोषण के लिये है, किन्तु वास्तव में, सौन्दर्य शोषक है, सौन्दर्य स्वामी है, तथा सौन्दर्य नियामक तत्व है।

और प्रेम क्या है ? प्रेम का अर्थ है औरों के लिये त्याग। हमें यह नहीं सोचना चाहिये कि हमारे द्वारा त्याग का शोषण हो। त्याग का प्राप्तकर्ता कौन होगा ? क्या वह हमारा दल है ? नहीं। हम उन लोगों के समूह में हैं जो अपना बलिदान करते हैं; प्रमुखतः निषेधात्मक दल, महाभाव दल। प्रेम का आधारभूत सिद्धान्त त्याग है, किन्तु त्याग किसके लिये ? तथा लाभार्थी कौन है ? प्रेम ही लाभार्थी है। हर एक को केन्द्र के प्रति योगदान करना चाहिये परन्तु किसी को उससे शक्ति वापस नहीं खींचनी चाहिये। 'जीने के लिये मरो।" इस भावना के साथ हमें जुड़ना चाहिये तथा वास्तविक प्रेम एवं सौन्दर्य के लिये कार्य करना चाहिये।

प्रेम की पताका

और सौन्दर्य विश्व में विजयी होगा। प्रेम विश्व में विजयी होगा। इसके लिये हम हर वस्तु का बलिदान कर देंगे कि दिव्य प्रेम की पताका समूचे विश्व में फहरे, क्योंकि उस दिव्य प्रेम का एक कण सभी दिशाओं में शान्ति की स्थापना और शान्ति के वितरण में समर्थ होगा। जिस प्रकार युद्धरत योद्धा अपना सर्वस्व उत्सर्ग कर देते हैं तथा अपने प्राण निछावर कर देते हैं ताकि भविष्य में उनके देशवासी लाभान्वित हों, हमें भी अपने जीवन का बलिदान कर देना चाहिये तथा प्रत्येक मनुष्य की सच्ची शान्ति के लिये कार्य करना चाहिये।

वृन्दावन, कृष्ण की भूमि, में बलिदान की माप असीमित है। भक्तगण वहाँ कृष्ण के लिये हर प्रकार का जोखिम उठाने को उद्यत हैं। यदि त्याग का वह सिद्धान्त सिंहासनरूढ़ किया जाय तो शक्ति स्वतः उपस्थित होगी।

कृष्ण चेतना को अन्य सभी धारणाओं से ऊपर प्रतिष्ठित किया जाना चाहिये। अन्य सारे विचार कृष्ण चेतना के सहायक बनने के लिये हैं। वृन्दावन का आदर्श जो कृष्ण का धाम है, अन्य सारे आदर्शों से ऊपर हैं। आन्तरिक तुलना में श्री चैतन्य महाप्रभु की लीला अन्य सारे विचारों से ऊपर है। वहां आस्तिकता अपने शिखर पर पहुंच जाती है। वही हमारा सर्वोच्च लक्ष्य है, तथा एक एक कदम करके उसकी व्याख्या की जानी है, चिन्तन किया जाना है स्वीकार किया जाना है तथा उसका उपदेश किया जाना है।

आणविक मृत्यु

इसके बिना, आप अपने वर्तमान व्यवसाय से किस लाभ की आशा कर रहे हैं? केवल मृत्यु आप की बाट जोह रही है। आप इस वैज्ञानिक सभ्यता पर इतना गर्व कर रहे हैं और इतनी डींग हांक रहे हैं, किन्तु

मृत्यु आप की प्रतीक्षा कर रही है, वह आणविक मृत्यु हो अथवा स्वाभाविक मृत्यु। आप मृत्यु को नहीं पार कर सकते। एक अंग्रेज कवि ने लिखा है - -

अग्रदूत बनने की डींग, शक्ति का प्रदर्शन,
तथा जो कुछ सुन्दरता और सम्पत्ति ने कभी दिया है
समान रूप से अन्तिम क्षणों की प्रतीक्षा करते हैं,
शान- शौकत के मार्ग केवल कब्र तक ले जाते हैं,
टामस ग्रेः एलिजी इन ए कन्ट्री चर्च यार्ड
(एक ग्रामीण गिरजाघर के घेरे में शोकगीत)

आप सबसे बड़े खतरे को सुलझाने की चिन्ता नहीं करते। आप कहते हैं कि आप बड़े विचारक हैं तथा आप को समाज से आदर मिलना चाहिये, किन्तु यहां प्रत्येक परमाणु की सामान्य अपरिहार्य समस्या मृत्यु का है। उस महानतम खतरे को सुलझाने में आप का क्या योगदान है जो हर किसी को खा जाने की प्रतीक्षा में है - - - एक वैज्ञानिक, कीटाणु से लेकर विषाणु तक को ? मृत्यु का आप का समाधान क्या है ? उस सार्व भौम खतरे के समाधान के लिये क्या आप ने कोई कदम उठाये हैं ? इस समय आप जो कर रहे हैं वह शोषण है, और आप प्रतिक्रियास्वरूप एक निम्नतर जीवन को प्रोत्साहन दे रहे हैं। आप प्रकृति का शोषण कर रहे हैं, और जो लोग उससे लाभ उठा रहे हैं उन्हें ब्याज सहित एक एक पाई चुकानी ही पड़ेगी।

"हर कार्य के लिये एक समान और विरोधी प्रतिक्रिया है।" यह आप का कथन है, किन्तु उसके समाधान के लिये आप ने किया क्या है ? आप ऊपरी आराम के लिये अपने लुभावने प्रस्तावों द्वारा विश्व के भाग्य को खतरे में डाल रहे हैं। यह क्या है ? आप सबसे बड़े तथा अनिवार्य खतरे की उपेक्षा कर रहे हैं, इसलिये आप का जीवन एक निरर्थक तथा व्यर्थ की व्यस्तता है। साहस पूर्वक वास्तविक समस्या, सामान्य समस्या, तथा सर्वाधिक खतरनाक समस्या का सामना करने के

लिये आगे आओ, अन्यथा आप को मैदान छोड़ देना चाहिये और भाग जाना चाहिये। उसे हमारे लिये छोड़ दीजिये। हम सिद्ध कर देंगे कि जगत पूर्ण आनन्द का स्थल है (**विश्व म पूर्ण सुखायते**)

सत्य में गहरे डूबो

किन्तु इसे समझाने के लिये, आप को गहरायी में गोता लगाना होगा, न केवल शरीर और मन के धरातल में, अपितु आत्मा के धरातल में । आप को इस सत्य के अन्तस्तल में बैठना होगा जो हमारे भीतर है। वह कोई परायी वस्तु नहीं है जिसे उधार द्वारा प्राप्त करना है, अपितु आत्मा प्रत्येक प्राणी के भीतर विराजमान है, यहां तक कि कीड़े- मकोड़ों और पेड़ों तक में। इसलिये हमें आत्मा के धरातल तक उठना है। अपने शारीरिक तथा मानसिक दोनों लबादों को उतार फेंको तथा अपनी निजी आत्मा की खोज करो। वहां आप को कुंजी मिलेगी, उस वास्तविक लोक का सूत्र उपलब्ध होगा जहां जीवन जीने योग्य है।

समाधान है, उसके लिये अनेक महाजनों, विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के महान सन्तों द्वारा किसी सीमा तक संकेत दिये गये हैं, किन्तु हमारा दावा है कि भारत ने भगवद्गीता तथा श्रीमद्भागवतम् में आध्यात्मिक जगत की सर्वोत्कृष्ट अवधारणा प्रदान की है। अतः हम आप सब को चुनौती देते हैं; हन कल्पना जीवी नहीं हैं; हम बहुत व्यावहारिक विचारक हैं। हम यह कह कर किसी बड़ी समस्या को टालते नहीं कि, 'अरे यह नहीं सुलझायी जा सकती।" हम उस दल से संबद्ध नहीं हैं जो सरलता से ख्याति और प्रतिष्ठा पाने को इच्छुक हैं। हम अपने को ऐसे ढोंगी लोगों के वर्ग में नहीं रखना चाहते। आइये और देखिये कि क्या सत्य का धरातल खोजा जा सकता है। आप को अपने अभियान में थोड़ी शक्ति व्यय करने से काम नहीं चलेगा, अतः हमारे कार्यक्रम को अपनाइये, प्रयास कीजिये और देखिये।

आप कहां हैं ? आप कौन हैं ? जगत का वास्तविक स्वरूप क्या है ? कुरान में, बाइबिल में, वेदों में, तथा प्रत्येक अन्य शास्त्र में जीवन तथा सत्य के बारे में एक आशा और एक संकेत दिया गया है। क्या यह सब एक पाखण्ड है ? भौतिकवादियों ने क्या आकर्षण दिया है ? वह आकर्षण केवल आत्म प्रवचकों के लिये है, और वह उन्हें उधार और ऋण के देश में ढकेल रहा है, ऐसा देश, 'जहां प्रत्येक कार्य की एक समान एवं विरोधी प्रतिक्रिया है।" अतः इस धरातल पर एक दैवी सभ्यता उतारनी है। हमें उस पथ पर अग्रसर होना है जिसे महान सन्तों एवं शास्त्रों ने सुझाया है। यह विवेकरहित नहीं है। यह पागलपन नहीं है। आइये, वहां तर्क भी लागू हो सकता है।

श्री चैतन्य महाप्रभु ने हमारी सारी समस्याओं का समाधान एक रूपकात्मक उदाहरण द्वारा प्रदान किया है। उन्होंने कहा, 'हम देखते हैं कि आप गरीब हैं, किन्तु एक सुखद समाधान है। आप की सम्पत्ति आप के ही कमरे के तलघर में है : उसे बाहर लाने का तनिक प्रयास तो कीजिये। उसके पास दक्षिण की ओर से मत पहुंचिये जो कि कर्म की लेन- देन की विधि है, क्योंकि तब जो कुछ आप करेंगे वह कोई न कोई प्रतिक्रिया उत्पन्न करेगा जो आप को पकड़ेगी तथा उद्विग्न करेगी, और आप को उचित समाधान तक पहुंचने का समय ही नहीं मिलेगा। यदि आप उस गुप्त धन तक पश्चिम दिशा, योग पद्धत्ति, अर्थात प्रकृति की सूक्ष्म शक्तियों की चातुर्यपूर्ण सिद्धि जिससे अतिप्राकृतिक रहस्मय शक्ति मिल जाये, से पहुंचेंगे तो वह आप को चमत्कृत कर देगी और आप का ध्यान वांछनीय लक्ष्य से दूर हटा देगी। गलत दिशा में आप की अपनी क्रिया ही आप की उपलब्धि में मार्ग के बाधा खड़ी कर देगी।

समाधि प्रेत

यदि आप उस खजाने तक उत्तर से, अर्थात ब्रह्मसिद्धि के शान्दार मार्ग से, निर्गुण अवधारणा से, वेदान्तवादी न्याय की एक भ्रामक व्याख्या

की सहायता से पहुंचते हैं, तो आप एक शास्वत समाधि में प्रवेश कर जायेंगे, वह महान प्रेत आप को निगल जायेगा, आप का अशितत्व समाप्त हो जायगा, और तब उस धन की प्राप्ति की शान्ति का सुख लाभ करने वाला कौन होगा ? आप जब केवल पूर्व की दिशा से, भक्तिमार्ग से पहुंचेगे तो आप को सम्पदा आसानी से मिल जायगी। यही सूर्योदय का निर्देश है, प्रकाश- दाता निर्देशन। और उस प्रकाश को हम अपने हाथ से नहीं बनाते, वह प्रकाश सभी प्रकाश के स्त्रोत से आता है, स्वतः प्रकाश सत्य। वह ऐसे स्थान से उत्पन्न होता है जो हमें अज्ञात है। वह प्रकाश स्वतः प्रकट ज्ञान अर्थात भक्ति, तथा भक्ति- पथ है।

अपने भीतर की वास्तविक सम्पत्ति की खोज के लिये उस पथ को अपनाओ, और आप अपने आप को आसानी से पा जायेंगे, जो सबसे अधिक आश्चर्यमय है (**आश्चर्यवत पश्यति कश्चिदेनम**)अपनी उस आत्मा की खोज इतनी आश्चर्यजनक है कि आप यह सोच कर लज्जित होंगे कि 'मैं इस लौकिक जगत के आकर्षणों से किस प्रकार बहका दिया गया ? मैं आत्मा हूं। माया के लिये यह कैसे संभव हुआ कि उसने मेरे ऊपर ऐसा जादू किया कि मैं अपनी ही आत्मा को, जो इतनी आश्चर्यजनक तथा इतनी मूल्यवान हैं, भ्रमवशभूल गया। मेरे भीतर जो शान्ति विराजमान है उसकी प्रशंसा आध्यात्मिक दिग्जों द्वारा की गयी है किन्तु मैं नश्वर, तुच्छ तथा हेय पदार्थों से घिर गया। कैसे ? यह अत्यन्त आश्चर्यप्रद हैं, किन्तु मैं छला गया।

तब आत्मा से परमात्मा वासुदेव से नरायण, तदन्तर नारायण से कृष्ण, ईश्नरानुभूति की यह प्रगतिपरक समझ अवैज्ञानिक नही है, यह वास्तव में वैज्ञानिक हैं। यह विज्ञान है, वैज्ञानिक ज्ञान =

ज्ञानम ते हम साविज्ञानम् इदूम वाक्क्ष्यामि एशतः ।
यज ज्ञानात्वा नेह भूयोन्याज ज्ञातव्यम अवाशिष्यते ॥

भगवद्गीता (७.२) कृष्ण कहते हैं, "अर्जुन अब मैं तुम्हें वैज्ञानिक ज्ञान समझाऊंगा न केवल आत्मा के विष्य में अपितु उसकी शक्ति के विषय में भी। मन, इन्द्रियां तथा प्रकृति के विकार सब अनात्मा

अथवा भौतिक हैं। सत्य के प्रति प्रत्यक्ष तथा परोक्ष मार्ग है जिसे मैं अब तुम्हें समझाऊंगा। ध्यानपूर्वक मुझे सुनोः ज्ञानम तेऽहम सविज्ञानम। यह क्या है। मैं हूं और मेरी शक्ति है और जीव, से प्रण इकाइयां हैं जो आंशिक शक्ति सम्पन्न हैं।ये सब भौतिक जगतों को भर रही है। "यदि जीव शक्ति, आध्यात्मिक अंश निकाल लिया जाय तो प्रत्येक वस्तु पत्थर रह जायगी, तथा शोषण के लिये चिन्ता कौन करेगा ? यह सभी लड़ाई की प्रवृत्ति, शोषण की प्रव्रत्ति रूक जायगी यदि आंशिक शक्ति, जीव भूतद्रव्य से निकाल लिया जाय। आत्मा जड़ तत्व में प्रविष्ट हो गयी है और उसे सप्राण गतिशील वस्तु बना दिया है। इसे आप को भलीभाँति एक वैज्ञानिक रुप से समझ लेना चाहिये। आप को एक वैज्ञानिक व्याख्या प्रदान करने में हमारी योग्यता कम नहीं है।

आत्म वञ्चना का स्तर

एक सुन्दरतर जगत की उच्चतर अवधारणा यहा है। यह सत्य हैं और जहां ठहरने के लिये आप इतना अधिक प्रयास कर रहे हैं, जिस स्थान को आप सत्य मानते हैं असत्य है।

या निश्य सर्वभूताम तस्या जागर्ति स्यंमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥

"आप अपने वास्तविक आत्म- लाभ तथा वास्तविक सत्य के प्रति सोये हुये हैं जबकि आत्म- वंचना के स्तर पर आप जाग रहे हैं"। हमें अपने को सत्य के धरातल पर स्थापित करना चाहिये तथा उसका विस्तार अन्य लोगों तक करने का सुदृढ़ प्रयास करना चाहिये।

तथा उपदेश देने का अर्थ यह हैं "मुझे कृष्ण चेतना में वास्तविक श्रद्धा है और उसमें अत्यन्त रस लेता हूं। मुझे लगता है कि मेरी भावी आशायें भी इसी मैं हैं। चूंकि मुझे लगता है कि वह अत्यन्त स्वादिष्ट, उपयोगी एवं सुन्दर हैं, अतः मेरे मित्रों में उसे तुम्हें बांटने आया हूं। हमें अपना जीवन कृष्ण चेतना के सिद्धान्तों के अनुसार बनाना है जैसी कि

अध्यात्म गुरु ने शिक्षा दी है। उसे अपनाइये और आप अपने जीवन के ध्येय को पूरा करने में सफल होंगे।"

रस, आनन्द एवं परमानन्द

इस प्रकार हमें प्रत्येक के पास कृष्ण चेतना के साथ पहुंचना है। हमें अवश्य दिखाना है कि किस प्रकार ईश्वर- चेतना अन्ततोगत्वा कृष्ण चेतना में विलीन हो जाती है। हमें, एक एक चरण, निपुणता से सिद्ध करना है कि कृष्ण समस्त सुख के आभार हैं (अखिल रसामृत मूर्ति :)। कृष्ण चेतन्य क्या है? रुप गोस्वामी ने एक वैज्ञानिक परिभाषा दी है। रस, सुख को छोड़ा नहीं जा सकता। हम सब रस के पीछे लगे हैं। प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक इकाई, यहां तक कि जात की न्यूनतम इकाई तक रस, आनन्द, परमानन्द के पीछे सदैव लगी है, तथा रस के सारे संभव रुप कृष्ण में मूर्तिभन्त हैं। समझने का प्रयास करो कि ऐसा कैसे हैं ? रस क्या है? उसका स्वरुप क्या है? रस में एक तुलना कैसे की जा सकती हैं ? इस प्रकार, एक एक चरण करके, आपको देवाधिदेव कृष्ण के विचार तक आना ही होगा। यह प्रचीन भारतीय शास्त्रों से एक कहानी नहीं है। कृष्ण एक कहानी के विषय नहीं अपितु तथ्य हैं। आप को आगे आना होगा और उस जीवित तथ्य, उस सत्य का सामना करना होगा। आप को यह दिखलाने के लिये कि वह एक तथ्य कैसे हो सकता है हम अपनी ओर से भरसक प्रयास करेगें। कृष्ण एक तथ्य हैं। वे एक सत्य हैं और सत्य अपने लिये होता है।

आप को लक्ष्य के लिये कीमत चुकानी होगी। "जीने के लिये मरो", और इस प्रकार आप अनुभव करेगे कि यह एक पाखण्ड नहीं है। जब आप इस पथ पर आगे बढ़ेंगे तो इसका अनुभव करेंगे (भक्ति परे सानुभवों विकृतिर अन्यत्र च)। हर अग्रसर कदम के साथ आप इन तीन वस्तुओं का अनुभव करेगें : सन्तोष, पोषण तथा आप की शुधा का शमन। सामान्य रूप से आप की लालसा घटेगी। सामान्यतया हम

अनुभव करते हैं, मैं यह चाहता हूं मैं वह चाहता हूं, में सब कुछ चाहता हूं; फिर भी मैं अपनी भूख तृप्त नहीं कर सका हूं। किन्तु जैसे आप कृष्ण चेतना में प्रगति करेगें आप अनुभव केरेंगे कि आप की क्षुधा संतुष्ट हो रही है, और जिसे आप पहले मानते थे कि आपको राहत देगा वह आप से स्वयमेव विदा ले लेगा।उनका व्यापार आगे नहीं चलेगा, वे सब तिरोहित हो जायेंगे, आध्यात्मिक प्रगित की आप की स्वाभाविक समझना स्वतः बढ़ेगी तथा आप अपनी प्रगति की गति तीव्र होती पायेंगे। आप इन तीन बातों को व्यावहारिक रुप से अनुभव करेगें, अतः आइये और जो हम कहते हैं उसे ग्रहण कीजिये। इस प्रकार परिणाम भगवान के ऊपर छोड़कर आप को हर एक के पास पहुंचना हैं।

शक्ति के फल

हम केवल निर्मित हैं और हम इसलिये कार्य कर रहें हैं क्योकि उसने ऐसा करने के लिये हमें आदेश दिया है, इसलिये हमें अवश्य स्मरण रखना चाहिये कि वास्तविक भक्ति क्या है। जो कुछ मैं करता हूं, जो कुछ मजदूरी मैं कमाता हूं मेरे पास कदापि नहीं आनी चाहिये, मैं केवल एक एजेन्ट हूं। लाभ मेरे मालिक, मेरे स्वामी, कृष्ण के पास जाना चाहिये। हमें इस विचार से चलना चाहिये, और यही सच्ची भक्ति है। अन्यथा हम कर्मकाण्ड, फलाशक्ति में उलझ जायेंगे। मैं कर्म के फल का सुख स्वयं अपने लिये जाना चाहता हूं, किन्तु फल मेरे मालिक के पास जाना चाहिये। मैं उनका सेवक हूं, और मैं उनके आदेशानुसार काम कर रहा हूं। मैं उनका दास हूं; मैं मालिक नहीं हूं। मैं शक्ति के फलों को प्राप्त करने वाला उचित व्यक्ति नहीं हूं। शक्ति का स्वामी स्वयं परमात्मा हैं तथा शक्ति के सारे उत्पादों को उन्ही के पास जाना चाहिये। रास्ते में उसके साथ कोई घपला नहीं होना चाहिये हर कार्य कर्त्ता का यही दृष्टिकोण होना चाहिये। तब वह वास्तविक भक्ति होगी। हम प्राप्तकर्त्ता नहीं है, वह प्राप्तकर्त्ता है। हमें सदैव सजग रहना चाहिये कि वही एकमात्र

लाभार्थी है। केवल तभी हम भक्त हैं। हम लाभार्थी नहीं, केवल निस्वार्थ कार्यकर्त्ता हैं। भगवद्गीता (2.47) में ऐसा कहा गया है =

कर्मण्येवाधिवाकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।

मा कर्मफल हेतु भूर्मा ते संगोडस्त्वकर्मणि॥

"तुम्हें अपना कर्म करने का अधिकार है, किन्तु तुम्हे अपने कर्मो के फल का भोग करने का अधिकार नहीं हैं।" यह एक महान चेतावनी हैं। कृष्ण कहते हैं, " ऐसा मत सोचो कि चूंकि तुम अपने कर्मों के फल के भोक्ता नही हो अतः कर्म करने का कष्ट उठाने की तुम्हे आवश्यकता नहीं हैं- - कभी नहीं।" यह सोचना कि चूंकि मैं लाभार्थी नहीं हूं अतः मैं कर्म नहीं करुंगा, अत्यन्त घृणित अभिशाप है। यहां तक कि निस्वार्थ कर्म भी एक निम्नस्तरीय वस्तु है। इसकी अपेक्षा हमें दैवी कार्य परमात्मा की संतुष्टि के लिये करना चाहिये। वही भक्ति है। तथा भक्ति में स्तर भेद भी है : विधि- भक्ति तथा राग- भक्ति नियमपरक भक्ति तथा स्वाभाविक भक्ति में भारी अन्तर हैं।

निरंकुश, तानाशाह तथा मिथ्याभाषी

ईश्वर एक संवैधानिक राजा नहीं है किन्तु वह एक स्वेच्छाचारी शासक है। एक स्वेच्छाचारी शासक के लिये काम करना बलिदान का उच्चतम स्वरुप है। एक निरंकुश, क्रूर तथा मिथ्याभाषी, जो कुछ भी करने को उद्यत हैं, इस के लिये कार्य करने हेतु स्वार्थहीनता तथा साहस की कितनी बड़ी मात्रा की आवश्यकता है ? केवल इतना ही नहीं उसकी स्वाभाविक स्थिति ही ऐसी है। यह उसकी अस्थायी मनोदशा नहीं अपितु उसका शाश्वत आन्तरिक स्वभाव है। कृष्ण निरंकुश शासक है क्यों कि नियम उन्हीं से निकलते हैं एक निरंकुश शासक कानून से ऊपर होता है। जब अनेक हैं, तब नियम की आवश्यकता होती है। जब केवल एक है, तब नियम की कोई आवश्यकता नहीं है। कृष्ण स्वेच्छा चारी हैं किन्तु वे निरपेक्ष शुभ है। यदि उनकी निरंकुशता में कोई प्रतिवन्ध लगता है तो संसार ही घाटे में रहेगा। शुभत्व को पूरी छूट मिलनी चाहिये। क्या यह

बुरा है ? क्या इसके विरुद्ध कोई आपत्ति हो सकती है ? शुभत्व को सर्वत्र प्रवाहित होने के लिये स्वतन्त्रता चाहिये । यदि हम कहते हैं कि ईश्वर निरपेक्ष शुभ है तो उसे निरंकुशता देने में हम खोते क्या है ? क्या निरंकुशता अज्ञानियों तथा मूर्खों के लिये हैं ? नहीं। निरपेक्ष शुभ को पूर्ण स्वच्छन्दता अवश्य मिलनी चाहिये । ऐसा नही है कि कानून उसके हाथ बांधने जायगा । तब हम घाटे में होगें । और कृष्ण मिथ्याभाषी हैं जिससे वे हमें लुभासकें, क्योंकि हम पूर्ण सत्य को नहीं समझ सकते । वे मिथ्याभाषी बने हैं ताकि धीरे धीरे सत्य के करीब आने के लिये हमें लुभा सके ।

सबसे पहले समझने की वस्तु यह है कि वे सर्वशुभ हैं, अतः उनसे निरस्त होने वाली प्रत्येक वस्तु शुभ के सिवा और कुछ हो ही नहीं सकती । कोई त्रुटि है तो हमारी ओर है ।हम अनधिकार अतिक्रम करने वाले है । वे अतिक्रमी नहीं है । किन्तु वे इसे अपने खेल, अपनी लीला के रुप में दिखाते हैं । सब कुछ उनसे सम्बन्ध हैं, उनकी हैं, अतः मिथ्याचार जैसा कुछ नहीं है । जब उन्होने कहा "प्रकाश हो जाय", प्रकाश हो गया : "जल हो जाय", जल हो गया । यदि उनके पास ऐसी निहित शक्ति है, तो क्या कुछ भी मिथ्याभाषण जैसा हो सकता है ।

हमें कृष्ण के लिये अपने को निछावर कर देना है क्योकि वे निरपेक्ष शुभ; सौन्दर्य और प्रेम हैं । वहां इस उच्च मात्रा में श्रद्धा तथा निस्वार्थता की आवश्यकता है । यदि हम अपने उच्चतम आदर्श के रूप में कृष्ण चेतना को स्वीकार करते हैं ; तो इतने अधिक बलिदान की आवश्यकता है, किन्तु बलिदान ही जीवन है **"जीने के लिये मरो"** । वलिदान से हानि नहीं है । अपने को उत्सर्ग कर हम लाभ में ही रहेंगे ।

इसीलिये, कीर्तन, अथवा धर्मोपदेश साध्य के सघन के रूप में स्वीकार किये गये हैं । कीर्तन द्वारा इस संसार की आत्माओं तक पहुंचने के अनेक मार्ग हैं; सीधे पहुंचना, ग्रन्थों के माध्यम से पहुंचना, तथा संकीर्तन द्वारा अर्थात पवित्र नाम के समूह में तथा सभाओं- शोभायात्रनाओं में जप- गान द्वारा । दूसरों की सहायता कर

हम अपनी ही सहायता करते हैं : हम अपनी निर्यात और अपने विश्वास की सहायता करते हैं। हमारे कीर्तन द्वारा न केवल औरों को लाभ पहुंचेगा, अपितु हम स्वयं भी शाश्वत रूप से लाभान्वित होगे।

शाश्वत रिक्तता

कृष्ण भागवदगीता में कहते हैं (2.47)" अपना कर्त्तव्य न करने में कभी अनुरक्त मत हो **(मा ते संगोडस्त्वकर्मणि)**। तुम्हे कर्त्तव्य मेरे लिये करना हैं, क्या तुम नहीं करोगे ? अपने को उस सुखद प्रक्रिया के अधीन मत करो, क्योंकि तब तुम्हारा विनाश हो जायगा। कर्म- साहित्य एवं हड़ताल से मत जुड़ो। नही। वह एक खतरनाक मीत्यता है। उस शाश्वत मीत्यता में मत कूदो, किन्तु मेरे लिये कर्म करो, और तुम्हारी श्रीवृद्धि होगी। कृष्ण कहते हैः सभी प्रकार के कर्त्तव्यों का परित्याग करके केवल मेरे प्रति समर्पण भाव से शरणागत हो जाओ **(सर्वधार्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज)**। मेरी स्थिति इस प्रकार हैं में तुम्हारा अभिभावक, मित्र और तुम्हारा सब कुछ हूं। तुम्हारे जीवन का लक्ष्य मुझमें है। कम से कम मुझ को तुम्हे धोखा नहीं देना है। तुम मेरे सखा हो- तुम इसे बस मान भर लो।

मन्मनाभव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यासि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोसि में॥

"सदैव मेरा ही चिन्तन करो मरे भक्त बन जाओ, मेरी पूजा करो और मुझे प्रणाम करो। इस प्रकार निश्चय ही तुम मेरे निकट आ जाओगे मेरे प्रिय मित्र मैं शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा करता हूं। मैं सब कुछ हूँ। मेरे पास आने का प्रयत्न करो। मैं लक्ष्य हूं जीवन की पूर्णता हूं न केवल तुम्हारे लिये अपितु सब के लिये। परिमार्थिक दृष्टि से मेरी स्थिति इसी प्रकार है। कम से कम तुम मेरे मित्र हो। तुम मेरा विश्वास कर सकते हो। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं ऐसा ही हूं।

यहां कृष्ण अपनी आत्मभिव्यक्ति किस निर्लज्जता के साथ कर रहे हैं। उन्होने हमारे लाभ के लिये अपनी इतनी अधिक वकालत की है। तथा हमारे मार्गदर्शन हेतु भगवतगीता में एक रेकार्ड सुरक्षित हैं। एवं भगवान कृष्ण अपने विषय में उपदेश देने के लिये श्री चैतन्य महाप्रभु के रुप में पधारे। अपने नित्य- परिवार के साथ वे अपने ही प्रचार हेतु आये। यहां तक कि मूर्तिमन्त भक्ति श्रीमती राधारानी को भी अपने साथ यह कह कर लाये कि मैं दिखलाऊंगा कि मेरी सेवा में आप की स्थिति कितनी आकर्षक है, मेरे दूसरे अर्धांग की भक्ति कितनी सुन्दर और गरिमामय हो सकती है। अतः मेरे साथ आओ"। तथा प्रचार हेतु बलदेव नित्यानन्द् के रुप में आये हैं। एवं वृन्दावन अपने प्रचार हेतु नवद्वीप में आया है। अतएव हम प्रचारक के बहुत ऋणी हैं विशेषकर जब कृष्ण स्वयं प्रचार करने हेतु आये हों तथा यह दिखलाने पधारे हो कि दिव्य प्रेम कितना सुन्दर, कितना महिमामय तथा कितना त्यागमय हैं।

थी, वे हमारी मानसिक धरती से उपजी थी और अब वे सब चली गयीं तथा मर चुकी है वे सब चली गयी है , तथा कृष्ण अकेले ही हृदय में हैं। उस समय हृदय केवल कृष्ण से भरा होता है कृष्ण की अवधारणा से भरा

श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने एक बार हरे कृष्ण मंत्र में दीक्षा के समय एक शिष्य को उपदेश दिया कि कृष्ण को हमारे हृदय में उसी प्रकार स्थापित होना चाहिये जैसे जल सेना फौज को भूमि पर स्थापित कर देती है फौज को जहाज पर ले जाया जाता है और जब वह विधिवत स्थापित हो जाती है , युद्ध आरंम्भ हो जाता है तथा वे विजयी हो जाते हैं , जैसे कि जूलिअस सीजर ने कहा , "मैं आया , मैने देखा और मैं जीता।" अतः हमको कृष्ण को अपने हृदय में आने देना है तब युद्ध आरंम्भ होगा।

कृष्ण चेतना का प्रस्ताव क्या है, तथा अन्य तमाम प्रत्ययों का प्रस्ताव क्या है ? वे सब हमें अपना आश्वासन दे रहे हैं अनादिकाल से यह कह कर कि "मैं तुम्हें यह दूंगा, मैं तुम्हें वह दूंगा, "किन्तु कृष्ण चेतना प्रवेश करेगी तथा कहेगी, "मेरा दावा यह हैं सब कुछ मेरा है , तुम लोग सबके सब अनाधिकृत अतिक्रमण करने वाले हो। "युद्ध आरंम्भ हो गया, अवांछनीय वस्तुयें निश्चय ही तिरोहित होगीं तथा कृष्ण चेतना सम्पूर्ण हदृय को पकड़ लेगी। यही प्रक्रिया है। कृष्ण चेतना को केवल हमारे हृदय में डेरा डालना है।

किसी प्रकार एक युद्ध भक्ति द्वारा , कृष्ण चेतना का एक कण हमारे कानों के माध्यम से हमारे हृदय तक पहुंचना हैं , तथा कृष्ण जो कुछ चाहिये सब पूरा कर देगें। जिस किसी ने कृष्ण चेतना के प्रति लेशमात्र सम्मान भी आत्मासात कर लिया है , आध्यात्मिक जीवन में उसकी सफलता निश्चित हैं, आज या कल।

कृष्ण एक चोर हैं

हमने अपने चतुर्दिक ऊंची दीवारें भले उठा रखी हो कि कृष्ण चेतना कहीं हमारे भीतर प्रवेश न कर जाय किन्तु कृष्ण एक चोर हैं औरएक चोर को निमत्रण की आवश्यकता नहीं होती। वह अपने ही

लाभ के लिये प्रवेश करेगा , और यही हमारी शान्तवना है । हमारी शान्तवना है कि कृष्णा एक चोर है । माया ने चारो तरफ ऊंची दीवारें खड़ी कर रखी है किन्तु कृष्ण चेतना को रोकने वाला कोई नहीं है कृष्ण एक चोर है और वे एक दिन चोरी से घुसेगें।

एक भक्त यह सोचकर निराश हो सकता है कि चोर मेरे अपने घर में ही हैं मेरे अपने सगे संबंधी ही मेरे शत्रु है । मैं निराश हूँ । "हम निराश होसकते हैं । किन्तु कृष्ण चेतना हमें किसी प्रकार नही छोड़ने वाली है । कृष्ण हमारा पीछा करेगें और कुछ समय बाद वे विजयी होगें । और सारी वस्तुयें , वे कितने भी सुरक्षित तथा दृढ ढ़ंग से हमारे हृदयागार मैं बैंठी हों, निकल जायंगी । उन्हें हमारे हृदय के हर कोने से विदा होना पड़ेगा । कृष्ण जीतेंगें । कृष्ण सभी वस्तुओं को पकड़ लेगें । हमारे हृदय की अवांछनीय तथा वासनात्मक इच्छाये परायी वस्तुयें है । वे केवल कुकुरमुत्ते हैं कुकुरमुत्तों की भाँति वे उगते है , उनका स्थायित्व अथवा जड़ नही हैं वे जमीन में जड़ नहीं पकड़े हैं हम सोच सकते है कि जो कुछ हमने अपने हृदय में पाल रखा है वह बड़ा प्रिय है तथा वह पहले से हमारे आस्तित्व के अंश के रुप में हममें घुलमिल चुका है किन्तु जव कृष्ण चेतन में प्रवेश करती है तो वे सब कुकुरमुत्ते की भाँति बिखर जाते हैं ।

अन्नतः वे कुकुरमुत्ते हैं, उनकी जड़ नहीं है , धरती से उनका संबंध नहीं है । वे केवल प्रवाह में हैं । सारे भौतिक लाभ केवल सतह पर तैर रहे हैं वे हमारे संपूर्ण आस्तित्व में गहरायी से जड़ नहीं पकड़े हैं केवल कृष्ण चेतना का आस्तित्व सर्बत्र है , हमारी सत्ता के सभी अंगों में । अतः कुकुरमुत्तों को एक दिन नष्ट होना है । श्री मद्भागवत् (2.8.5)में इसकी सम्पुष्टी है ।

प्रविष्टः कर्णरन्ध्रेण स्वानां भाव - सरोरूहम ।
धुनोति शमलं कृष्णःसलिलस्य यथा शरत ॥

जब कृष्ण कान के माध्यम से हृदय में प्रवेश करते है,वे हृदय- कमल को पकड़ लेते हैं और तव धीरे- धीरे हृदय का सारा मैल गायब हो जाता है । जैसे जब शरद ऋतु का आगमन होता है , सारा पानी सर्वत्र शुद्ध

हो जाता है, उसी प्रकार कृष्ण जब हमारा हृदय में प्रवेश करते हैं भीतर की सारी अपवित्रतायें क्रमशः नष्ट हो जायेंगी और केवल कृष्ण सदा के लिये रह जायेंगे।

Centres World-Wide

Sri Chaitanya Saraswat Math
Kolerganj
P. O. -Nabadwip, Dist. -Nadia
West Bengal, INDIA.

Srila Sridhar Swami Seva Ashram,
Sri Chaitanya Saraswat Math,
Atalvan, Parikrama Marg,
P. O. : Vrindavan,
U. P., INDIA

Srila Sridhar Swami Seva Ashram,
Sri Chaitanya Saraswat Math,
Nr. Giridhari Panda's House,
Dasbisa, P. O. : Govardhan.
Dist. Mathura, U. P.,
INDIA

Sri Chaitanya Saraswat Math,
15 Gladding Road,
Manor Park,
London E15,U. K.
(Tel:081-478 2283)

Sri Chaitanya Saraswat Math,
61 Kampong Pundut,
Lumut,
Perak,
MALAYSIA
(Tel: 05-935153)

Sri Chaitanya Saraswata Krishnanushilana Sangha
487 Dum Dum Park,
Opposite Tank 3,
Calcutta 700055, INDIA
(Tel:59 5175) Mathura,

Sri Chaitanva Saraswat Math,
Gita Ashram,
Bidhaba Ashra, Road
Gaur Batsahi,
P. O. Puri, Orissa INDIA.
(Tel:06752-3413)

Sri Chaitanya Saraswat Ashram,
Vill. and P. O. Hapaniya.
Dist. Burdwan,
W. B. ,INDIA.

Sri Chaitanya Saraswata Krishnanushilana Sangha,
Kaikhali, Chiriamor,
(Nr. Calcutta Airport)
P. O. : R. Gopalpur,
District 24 Parganas,
W. Bengal, INDIA.

Crystal Springs Math,
110 S. El Camino Real, Suite 252,
San Mateo,
Ca 94401, U. S. A.
(Tel:415-347 3131)

Sri Nitai Gauranga Mandir,
Valton Road,
Long Mountain,
MAURITIUS

Editora Prema,
Av. Acoce, 320
04075 Moema,
Sao Paulo-S. P.,
BRAZIL.

Sri Chaitanya Saraswat Math,
330 N. E. 130th St.
Miami, F1 33161, U. S. A.

Representing
Sri Chaitanaya Saraswat Math,
Callc Svapure, Qta Jaca,
Colincs de Bcllo Monte,
Caracas, VENEZUELA.

Sri Chaitanya Sridhar Asan,
Lot 7 Springbrook Road,
Springbrook, QLD 4213,
AUSTRALIA.
(Tel: 075-335 131)

Sri Chaitanya Gemeenschap,
Sportstraat 48-I,
1076 TX Amsterdam,
HOLLAND.

Sri Chaitanaya Sridhara Sangha,
via Dandolo 24,
Int. 41/Scala B,
00153 Roma, ITALY.
(Tel: 589942)

Sri Chaitanya Saraswat Math,
Reforma 864, Sector Hidalgo,
Guadalajara, Jalisco, MEXICO.

Sri Chaitanaya Saraswat Math,
47 Boyd Street,
Est Camden, NJ 08105
U. S. A. (Tel: 609-966 1782)

Representing
Sri Chaitanya Saraswat Math,
CAR. 3a. 54A-72,
Bogota,
COLOMBIA.

Calle 69-B # 537, Por 58-B,
Fracc. Sta Isabel,
Kanasin,
Yucatan,
MEXICO

Sri Chaitanya Saraswat Math,
c/o Evangclista, A De Leon Street,
Barangay Village, Paranaque,
Metro Manila, Manila,
PHILIPPINES

O you sons of nectar
sons of the nectarine
ocean sea;

Please listen to me.

You were born in nectar.
You were born to taste nectar.
You must not allow yourselves to
be satisfied by anything but nectar.

Awake! Arise!
And search for that nectar.

Search
for
Sri Krishna

REALITY THE BEAUTIFUL